P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VJanuary-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

मृच्छकटिक में वर्णित लोकजीवन की झाँकी वर्तमान परिवेश में

एस.एस. गौतम
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दतिया (म.प्र.)

डी.पी. अहिरवार
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दतिया (म.प्र.)

सारांश

दीनानां कल्पवृक्षः स्वगुणफलनतः सज्जनानां कुटुम्बी
आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः शीलवेलासमुद्रः।
सत्कर्ता नवमन्ता पुरुषगुणनिधिर्दक्षिणोदारसत्त्वो
ह्योकः श्लाघ्यः स जीवत्यधिकगुणतया चोच्छ्वासन्तीव चान्ये।।[1]

समाज की सभी इकाईयां अपनी प्रकृति अनुसार मानव विकास में योगदान करतीं हैं। फिर भी सामाजिक पर्यावरण अनुसार उनके स्वभाव में विकृतियाँ हो जाती हैं जिनका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर होता है। मृच्छकटिक प्रकरण के कथानक में समाज के सभी आयामों का वर्णन हुआ जो वर्तमान सन्दर्भ में पूर्णरूपेण प्रासांगिक है।

मुख्य शब्द : कल्पवृक्ष, सरोकार, अराजकता, मानवमूल्य, निरंकुश, भाग्यवादिता, व्यवसन, श्लाघ्य, निकष, द्यूत, वंचना, कुलवधु

परिचय

मानव की प्रत्येक रचना परोपकार के लिए हुआ करती है। जिस प्रकार प्रकृति प्रदत्त संसाधन निःशुल्क प्राणीमात्र के लिए है। यथा– सरिता, सरोवरों का जल, वायु का संचरण, सूर्य का तेज, चन्द्रमा की शीतलता सभी कुछ परमार्थ के लिए है। उसी प्रकार सद्साहित्यकार की रचना परमार्थ एवं सामाजिक सरोकार के लिए हुआ करती है। मृच्छकटिक प्रकरण संस्कृत साहित्य का पूर्णरूपेण सामाजिक प्रकरण है, जिसका सरोकार लोक जीवन से है। उसमें सन्निहित मूल्यों वर्तमान परिवेश में भी प्रासांगिक है। चारुदत्त की दानशीलता, आचरणशीलता, उदारता, धार्मिकता आदि गुण समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए हर काल में अनुकरणीय रहे हैं। मृच्छकटिक में द्यूत, चोरी, वैश्यावृत्ति, अराजकता, छल, वंचना, झूठा साक्ष्य, झूठे मुकद्में आदि अनेकों प्रसंग ऐसे हैं जो तत्कालीन समाज की विकृति को तो दर्शाते ही हैं, साथ ही वर्तमान समाज के लिए संदेश भी देते हैं। चारुदत्त द्वारा गणिका को कुल वधु बनाना समाज के लिए अच्छे संदेश है। बसंतसेना द्वारा अपनी परिचारिका को दासत्व से मुक्त करना, मानवमूल्यों का शिखर है। बसंतसेना का त्याग संवाहक जैसे जुआरी का हृदय परिवर्तमान जो बाद में बौद्ध भिक्षु बनता है। सभी प्रसंग लोकजीवन से जुड़े हुए है। निरंकुश राजा का सत्ता परिवर्तन समाज में क्रांति की चेतना देता है। इन्हीं सभी तथ्यों एवं कथ्यों को इस शोधालेख में उल्लिखित करने का उपक्रम किया जा रहा है।

मानव समाज में स्वार्थ और परमार्थ दोनों प्रकार के कार्य देखने को मिलते हैं। मृच्छकटिक का नायक चारुदत्त परमार्थ स्वभाव का है। उसमें दानशीलता का भाव कूट–कूट कर भरा है। उसने दान के निमित्त उपजा सम्पूर्ण धन–धान्य निर्धनों में अर्पण कर दिया और स्वयं अवन्तिकापुरी में निर्धनता का जीवन व्यतीत करता दिखाई देता है। यथा–

अवन्तिपुर्या द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
गुणानुरक्ता गणिका च यस्य बसन्तशोभेव वसन्तसेना।।[2]

सम्पूर्ण मानव समाज कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में धार्मिक बन्धन से बँधा हुआ दृष्टिगोचर होता है। आज भारतीय समाज हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धार्मिक बन्धनों में बँधा हुआ है। मृच्छकटिक कालीन समाज में प्राचीन वैदिक कालीन धार्मिक रूप दिखाई देता है। चारुदत्त वेद मन्त्रों का उच्चारण एवं यज्ञ आदि से अपने परिवार के पवित्र होने की चर्चा करता है। यथा–

मखशतपरिपूतं गोत्रमुद्भासितं मे सदसि निबिडचैत्यब्रह्मघोषैः पुरस्तात्।
मम मरणदशायां वर्तमानस्य पापैस्तदसदृशमनुश्यैर्धुश्यते घोषणायाम्।।[3]

मृच्छकटिक में चन्दनक ने आर्यक की रक्षार्थ अनेक हिन्दू देवताओं की स्तुति की। यथा–

अभयं तव ददातु हरो विश्णब्रह्मा रविश्च चन्द्रश्च।
हत्वा शत्रुपक्षं शुम्भनिशुम्भौ यथा देवी।[4]

तत्कालीन समय में बौद्ध धर्म भी उन्नत अवस्था में होता नजर आता है। जाति, वर्ग, आयु तथा किसी सामाजिक स्तर का ध्यान न रखते हुए कोई भी व्यक्ति भिक्षु अथवा बौद्ध श्रमण बन सकता था। मृच्छकटिक में संवाहक बौद्ध श्रमण बनता दिखाई देता है। यथा–

स्त्रियाँ भी बौद्ध भिक्षुणी बन जाती थी। वे अपने भिक्षुक जीवन के सभी लौकिक क्रिया–कलापों तथा आनन्दों का परित्याग कर देते थे एवं धर्माक्षरों का पाठ करते हुए स्वर्ग की प्राप्ति की कामना में रत रहते थे। एक बौद्ध भिक्षु के उत्तम विचारों की परिचारिका गाथाएँ कहती है। यथा–

संयच्छत निजोदरं नित्यं जाग्रतध्यानपटहेन।
विशमा इन्द्रियचौरा हरिन्त चिरसंचित धर्मम्।।
पञ्चजना येनमारिता स्त्रियं मारयित्वाग्रामो रक्षितः।
अबलः क्व चण्डालो मारितोऽवश्यमपि स नरः स्वर्गं गाहते।।
शिरो मुण्डितं तुण्डं मुण्डितं चित्तं न मुण्डितं किमर्थं मुण्डितम्।
यस्य पुनश्च चित्तं मुण्डितं साधु सुश्ठु शिरस्तस्य मुण्डितम्।।[5]

धर्म का मूल उद्देश्य मानव को ऐसे बन्धनों में बाँधना है जो मनुष्य को उच्चश्रृंखला होने से सदैव बचाता है लेकिन मानव समाज ने धर्म का मूल उद्देश्य को तोड़कर एक दूसरे धर्म एवं धर्मालम्बियों के श्रेष्ठ तथा निकृष्ट मानने पर चल पड़े है। आज भी अनेक धार्मिक भावनाओं या धार्मिक क्रियाकलापों को लेकर धर्म संघर्ष होते दिखाई देते है। मृच्छकटिक में एक बौद्ध भिक्षुक के दर्षन को अमंगलकारी कहा गया है, जो किसी धर्म विशेष के प्रति कटुता का भाव ही नजर आता है। किसी धर्म के व्यक्ति का दर्शन शुभ एवं अशुभ नहीं होता, सभी व्यक्ति परस्पर मानव मात्र है। यथा–

कथमभिमुखमनाभ्युदयिकं श्रमणकदर्शनम्? (विचार्य)
प्रविशत्वमयमनेन पथा। वयमप्यनेनैव पथा गच्छामः।"[6]

भारतीय मानव समाज अधिकांशतः आज अनेकानेक अन्धविश्वास एवं शकुन तथा अपशकुन पर विश्वास करता दिखाई देता है। देश उत्तरोत्तर उन्नति कर कम्प्यूटर युग में प्रवेश कर गया है, लेकिन लोगों की मानसिक धारणाएं वहीं प्राचीन है। बिल्ली का रास्ता काटना, सर्प का रास्ता काटना, छींक का आना, खाली या जल से परिपूर्ण घड़े का दिखाई देना, दायी या बांयी आँख फड़कना, कौवे का बोलना इत्यादि शकुन एवं अपशकुन पर विश्वास करता नजर आता है। न्यायालय में प्रवेश करता हुआ चारुदत्त इसी प्रकार के अपशकुनों का कथन करता है। यथा–

रूक्षस्वरं वाशति वायसोऽयममात्यभृत्या मुहुराह्वयन्ति।
सव्यं च नेत्रं स्फुरति प्रसह्य ममानिमित्तानि हि खेदयन्ति।।[7]

अपि च–

शुष्कवृक्षस्थितो ध्वङ्क्ष आदित्याभिमुखस्तथा।
मयि चोदयते वामं चक्षुर्घोरमसंशयम्।।[8]

अपि च–

मयिविनिहितदृष्टिर्भिन्ननीलाञ्जनाभः
स्फुरितविततजिह्वः शुक्लदंष्ट्राचतुश्कः।
अभिपतति सरोषो जिह्मिताध्मातकुक्षि–
र्भुजगपतिरयं मे मार्गमाक्रम्य सुप्तः।।[9]

भारतीय समाज में आज अपने आप को बुद्धजीवी, पढ़ा–लिखा एवं कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाला मानता हो, परन्तु सिद्ध पुरूषों, तान्त्रिकों तथा ज्योतिषाचार्यों की तथाकथित भविष्य वाणियों पर विश्वास करता नजर आता है। मृच्छकटिक कालीन समाज भी इसी प्रकार की भविष्यवाणियों पर अटूट विश्वास करता दृष्टिगोचर होता है। अधिकरणिक इसी प्रकार का कथन कहता है। यथा–

सूर्योदये उपरागो महापुरुष नपातमेव कथयति।[10]

वर्तमान समाज में आज भी अनेकानेक व्रतों पर अटल विश्वास देखा जाता है। तत्कालीन समाज भी इन व्रतों पर विश्वास करता रहा है। मृच्छकटिक में सूत्रधार की पत्नि अपने अनुरूप पति प्राप्ति नामक व्रत धारण करती दिखाई देती है। यथा–

'अहिरूअवदीणाम।' (अभिरूपपतिनाम्।)[11]

सामान्यतः जनमानस में यह आम धारणा दृष्टिगोचर होती है कि जो भाग्य या किस्मत में लिखा होगा सो वही होगा। मृच्छकटिक में इसी प्रकार का कथन चारुदत्त कहता है। यथा–

"स्वस्ति चास्मासु दैवतः।"[12]

निर्दोश को न्याय एवं दोषी को सजा मिलना चाहिए। यह सामान्यतः कहा जाता है लेकिन आज वर्तमान परिवेश में कई ऐसे उदाहरण है जिसमें दोषी के द्वारा गवाह एवं साक्षों को धन तथा बाहुबल के द्वारा अपने पक्ष में कर लिए जाते है और दोष निर्धनों के माथे गढ़ दिये जाते है। चारुदत्त मृच्छकटिक में इसी प्रकार का जीता–जागता उदाहरण है। चारुदत्त का कथन है कि यथा–

परिज्ञातस्य मे राज्ञा शीलेन च कुलेन च।
यत्सत्यमिदमाह्वानमवस्थामभिशङ्कते।।[13]

अर्थात्– राजा के द्वारा स्वभाव एवं कुल से भली–भाँति जाने गये मेरा जो यह बुलावा है वह सचमुच दरिद्रता के कारण शंका पैदा कर रहा है। (क्योंकि दोष गरीबों पर ही गढ़े जाते हैं)।

अच्छे कर्म से स्वर्ग की प्राप्ति होती है और बुरे कर्म करने से नरक की प्राप्ति होती है, ऐसी आज जनमानस की आमधारणा देखी जाती है, जबकि यह केवल भावनात्मक एक कल्पना मात्र है। मृच्छकटिक कालीन समाज स्वर्ग एवं नरक पर पूर्णरूपेण विश्वास रखता नजर आता है। चारुदत्त का इसी प्रकार का कथन है। यथा–

अमी हि द्वष्ट्वा मदुपेतमेतन्मर्त्यं धिगस्त्वित्युपजातबाष्पाः।
अशक्नुवन्तः परिरक्षितुं मां स्वर्गं लभस्वेति वदन्ति पौराः।।[14]

अपि च–

पञ्चजना येन मारिता स्त्रियं मारियत्वा ग्रामो रक्षितः।
अबलः क्व चण्डालो मारितोऽवश्यमपि स नरः स्वर्गं गाहते।।[15]

धन एवं बल का सर्वदा शासन रहा है। शक्ति के सहारे मानव अपने दुर्गुणों को गुणों के रूप में प्रस्तुत करते रहे। आज भी मंत्री–मिनिस्टर के साथ रहने वाले अपराधी, धनी एवं बलशाली लोग अनेकानेक प्रकार के प्रलोभनों से या डरा–धमकाकर अपने पक्ष में न्याय करा लेते, यदि ऐसा न करने पर स्थानान्तरण (ट्रांसफर) का भय दिखाते है। इसी प्रकार का रूप मृच्छकटिक में देखने को मिलता है। राजा पालक का शाला शकार न्यायाधीश (जज) को धमकाता है। यथा–

> आः किं न दृश्यते मम व्यवहारः!। यदि न दृश्यते, तदावुत्तं राजानं पालकं भगिनीपतिं विज्ञाप्य भगिनीं मातरं च विज्ञाप्यैतमधिकरणिकदूरीकृत्यात्रान्यमधिकरणिं क स्थापयिष्यामि।[16]

अर्थात्– (क्रोध के साथ) आह, मेरा मुकदमा (केस) नहीं विचारा जायेगा तो, मैं अपने जीजा, बहन के पति, राजा पालक से कहकर, बहन तथा माता से कहकर इस न्यायाधीश को हटा कर दूसरे न्यायाधीश को नियुक्त करा दूँगा।

भारतीय समाज में सद्गुणों के साथ–साथ कुछेक अवगुण भी देखने को मिलते है। समाज कभी एकांगी नहीं हुआ करता, वह सदैव सुख–दुःख, लाभ–हानि, जप–तप, जय–पराजय, गुण–अवगुण, जन्म–मृत्यु, यश–अपयश आदि द्वन्द्वात्मक होता है। आज भी शराब के अड्डे, जुए के फड़ (चौपाल) जगह–जगह देखने को मिलते है। वाकायदा उन जुआरियों के समस्त खाने–पीने की व्यवस्था की जाती है। इसी प्रकार का दृष्य मृच्छकटिक के कथानक में जुए के फड़ लगे दिखाई देते है और विधिवत न्यायालयों में उनको अर्थ दण्ड मिलता है। संवाहक को माथुर के द्वारा दस सोने की मोहरें दण्ड दिया जाता है। यथा–

> "प्रयच्छ तं दशसुवर्णम्। कुत्र गच्छसि।"[17]

इसी प्रकार दर्दुरक का भी कथन है कि मैंने सब कुछ जुआ से ही प्राप्त किया है और सब कुछ इसी के द्वारा गवा दिया है। यथा–

> द्रव्यं लब्धं द्यूतेनैव द्वारा मित्रं द्यूतेनैव।
> दत्तं भुक्तं द्यूतेनैव सर्वं नष्टं द्यूतेनैव।।[18]

निष्कर्ष

दानशीलता, आचरणशीलता, उदारता, निर्धनता, धार्मिक, हिन्दू, बौद्ध, अंधविश्वास, शकुन, अपशकुन, ज्योतिष, व्रत, भाग्यवादिता, बाहुबल, धनबल, स्वर्ग–नरक पर विश्वास, भाई–भतीजावाद अर्थात् सगे–सम्बन्धियों को ओट में प्रजा को प्रताड़ित करना, जुआ, चोरी आदि व्यवसन में फसा हुआ समाज वर्तमान जैसा ही दृष्टिगोचर होता है।

सन्दर्भ

1. मृच्छकटिकम् 1/48
2. मृच्छकटिकम् 1/6
3. मृच्छकटिकम् 10/12
4. मृच्छकटिकम् 6/27
5. मृच्छकटिकम् 8/1–3
6. मृच्छकटिकम् पृष्ठ 455
7. मृच्छकटिकम् 9/10
8. मृच्छकटिकम् 9/11
9. मृच्छकटिकम् 9/12
10. मृच्छकटिकम् पृष्ठ 568
11. मृच्छकटिकम् पृष्ठ 21
12. मृच्छकटिकम् 9/15
13. मृच्छकटिकम् 9/8
14. मृच्छकटिकम् 10/6
15. मृच्छकटिकम् 8/2
16. मृच्छकटिकम् पृष्ठ 569
17. मृच्छकटिकम् पृष्ठ 137
18. मृच्छकटिकम् 2/8